मिथिला लोक चित्रकला

बिहार के उत्तर और नेपाल की तराइ मे बसा मिथिलांचल अपनी लोकचित्र कला के लिए आज भी जगत प्रसिद्ध हैं।यह क्षेत्र हमेशा से शातंप्रिय रहा, इस कारण यहाँ कला संस्कृति का काफी विकास हुआ। आज भी मिथिला का समाज संस्कारो से बंधा हुआ है। यहाँ शैव, शाक्त, वैष्णव, और अन्य धर्मावलम्बी सद्भाव से रहते हैं। मिथिला गंगा, कोसी और गंडक नदियों के बीच का भूभाग है जो अत्यधिक उपजाउ है। मिथिला की चित्रकला लोक चित्रकला हैं। इनकी रचना के स्त्रोत मे लोक प्रवृितयाँ और लोक मान्यताएँ हैं। इनका विकास भी लोक जीवन से हुआ है। लोककलाएँ देश की सांस्कृतिक विरासत होती हैं। समाज के आचार विचार से इनका गहरा रिश्ता है इसलिए इनका समाजशास्त्रीय महत्व भी है। दृश्यकलाओं मे सबसे प्राचीन लोकचित्र परम्परा है। लोककलाएँ पीढी दर पीढी संस्कारों की तरह हस्तांतरित होती है। समय, परिस्थितियों के कारण ये रुप बदल लेती हैं पर इनका रिश्ता समाज के साथ अटुट है। यहाँ के मुख्य जिले दरभंगा, मधुबनी, सीतामढी, सहरसा, समस्तीपुर, पुर्णिया आदि हैं, जहाँ आज भी लोककला परपंरा जीवित है।

मिथिला लोकचित्र कला की पृष्ठभूमिः– मिथिलाचंल के कला विद्वानों के अनुसार यहाँ लोकचित्रण की परपंरा प्राचीनकाल से चली आ रही है जो मूलतः भित्तिचित्रण के रुप मे थी जो बाद मे कागज पर बनने प्रारंभ हुए। कलम से रेखांकन प्रारंभ हुआ अतः आज भी मिथिला मे चित्र को लिखना कहा जाता है। बिहार मे सन् 1934 के भयंकर भूकंप के बाद ब्रिटीश अधिकारी विलियम जी आर्चर ने मिथिला के चित्रों की कलात्मकता को संसार के समक्ष रखा। इस लोककला मुख्य क्षेत्र मधुबनी और दरभंगा रहा है जिनमे मधुबनी का **जितबारपुर** एवं **रांटी** काफी प्रसिद्ध है। धीरे धीरे इस लोककला शैली का प्रचार प्रसार शुरु हुआ जब 1948 मे भारत की लोककलाओं और शिल्पों का प्रर्दशन लंदन मे हुआ तब मिथिला के लोकचित्रों को देखकर यूरोप के कला विद्वान देखकर चकित रह गए। बिहार की गौरवशाली चित्र परपंरा मिथिला कला की मांग विदेशों मे होने लगी। कला की लोकप्रियता के अनुसार मिथिला के चित्र अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रॉस, जापान आदि देशों मे जाने लगे।

मिथिला लोकचित्र कला तकनीक, प्रकार एवं विशेषताएंः– मिथिला लोक चित्रकला प्रमुखत तीन रुपों मे विकसित हुई **भित्तिचित्रण**, **पटचित्रण तथा अन्य माध्यम** एवं **भूमि चित्रण**। मिथिलाचंल मे **भित्तिचित्रण** की परपंरा अति प्राचीन है। यह प्रमुखतः मिट्टी की दिवाल पर बनाए जाते थे। मिट्टी की दिवाल धरातल का कार्य करता है। विवाह के समय **कोहबर** दिवाल पर ही बनाए जाते थे तथा अन्य धार्मिक चित्र भी दिवाल पर ही प्रमुखतः बनाए जाते थे। यह चित्र दो प्रकार के बनाए जाते थे **कचनी शैली** और **भरनी शैली** मे। कचनी शैली के चित्र रंगीन बनाए जाते हैं इनमे रंगों का प्रयोग अत्यधिक किया जाता है। कचनी शैली के चित्रों मे लाल एवं काले रंगों की प्रधानता रहती है। कचनी शैली मे लाल, पीला, नीला, हरा इत्यादि रंगों की प्रमुखता से प्रयोग किया गया है। मिथिला के भित्तिचित्रण मे मुख्य रुप से **कोहबर**

आता है। कोहबर मुख्यतः विवाह के समय लिखा जाता है। समाज के सभी वर्गों मे विवाह के समय कोहबर चित्रण होता है परन्तु ब्राहम्ण और कायस्थ परिवार मे यह अधिक कलात्मकता के साथ होता है। कोहबर चित्रण की आकृतियाँ अर्थपूर्ण हैं जो वंशवृद्धि प्रेम के प्रतीक चिह्नों से भरपूर होती हैं। संपूर्ण चित्रण नवदम्पति के सुखद भविष्य को दर्शाता है। कोहबर चित्रण मे फूल, पत्ता, पक्षी, सूर्य, चन्द्र इत्यादि आकृतियां समाहित होती हैं। कोहबर का रेखांकन अनार की कलम या रुइ की तालिका से किया जाता है। प्रारंभ मे यह रंग प्राकृतिक और खनिज रंगों से बनाए जाते थे। समय के साथ अब कैमिकल रंग भी लगाए जाते हैं। पिछले चालीस वर्षों से कोहबर कागज या अन्य माध्यमों मे भी बनने लगे हैं। भारत मे **पटचित्रण** की परपंरा अति प्राचीन है। कला विद्वानो के अनुसार महाराज शिवसिंह के काल मे यहाँ **पटचित्रण** की परपंरा प्रचलित थी। कागज के प्रचलन के कारण यहाँ पटचित्रों पर प्रतिकूल प्रभाव परा। भारतवर्ष मे **भूमिचित्रण** की प्रथा वैदिक युग से मानी जाती हैं ब्राहम्ण कर्मकांड तथा कालांतर मे तथा तंत्र साधना के समय इनके अनेक रुप सामने आए। धीरे धीरे भूमि चित्रण यहाँ के रीति रिवाज, संस्कारों का प्रमुख अंग बन गया। मिथिला लोक चित्रकला मे **भूमिचित्रण (अरिपन)** का महत्व काफी है। यहाँ सब वर्गों के पर्व त्याहारों पर अरिपन बनाना अनिवार्य माना जाता है। अरिपन के बिना कोई शुभ कार्य प्रारंभ नही होता। मिथिला मे प्रचलित अरिपन कमल, बाँस, मछली, कछुआ, पत्ते, फूल, शंख, चक्र, आदि हैं। प्रत्येक मांगलिक पर्व पर सुखे सिंदूर का प्रयोग आवश्यक हैं

मिथिला लोक चित्रकला के प्रमुख विषयः– मिथिला लोक चित्रकला शैव, शाक्त और वैष्णव धर्म पर आधारित रहे हैं। रामायण और महाभारत से सम्बन्धित काफी चित्र बनाए गए हैं। जैसे राम सीता विवाह, सीता स्वयंवर, रावण वध, द्रौपदी चीरहरण, कालीय र्मदन, गोर्वधन धारण, रासलीला, इत्यादि। जगदम्बा देवी देवी दुर्गा के अनेक प्रभावकारी चित्र बनाए। इसके अतिरिक्त काली, छिन्नमस्तिका, काली, चामुण्डा, भैरवी, शिव पार्वती, गणेश, सरस्वती, अर्द्धनारीश्वर इत्यादि विषयों पर चित्र बनाए गए हैं। चित्रों के अन्य विषय मे सामा चकेवा तथा बदलते समय के साथ समसामयिक विषय के भी चित्राकंन हुए हैं। प्रत्येक चित्र मे यहाँ बॉडर बनाने का चलन है जिसमे विषयानुसार फूल, पत्ती, फल, मछली, पक्षी एवं ज्यामितिय पैर्टन का प्रयोग होता है।

मिथिला लोक चित्रकला के प्रमुख चित्रकारः– मिथिला कला के प्रसिद्ध कलाकारों मे सीता देवी, गंगा देवी, जगदम्बा देवी, महासुन्दरी देवी, शिवन पासवान, कृष्णानंद झा, गोदावरी दत्ता, बौआ देवी आदि ने बिहार का गौरव बढाया है। इनमे से काफी कलाकार राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय सम्मान से सम्मानित हैं। यहाँ के चित्रकार विदेशों मे आयोजित होनेवाले भारत महोत्सव मे भी आमंत्रित किए गए हैं। मिथिलाचंल की लोककला के संर्वधन मे बिहार सरकार सतत प्रयत्नशील है।

सरोज कुमार

सहायक प्राध्यापक (ललित कला), आर. एम. कॉलेज